# कांग्रेस को उन्हीं आदर्शों पर वापस लौटना होगा

**ऐतिहासिकता**

प्रभात कुमार रॉय

विगत 125 वर्षों के जीवन काल के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अनेक रंग रुप और चेहरे मोहरे बदले। कांग्रेस ने क्या वस्तुतः संजीदगी के साथ यह चिंतन करने की जहमत उठाई कि एक राष्ट्रीय पार्टी के तौर पर उसके अस्तित्व संकट के बादल क्यो छा गए हैं। पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में कांग्रेस सत्ता से बाहर है। दक्षिण भारत में कर्नाटक कांग्रेस के हाथ से निकल चुका है। इन हालातों में कांग्रेस को अपने स्वर्णिम इतिहास पर विहंगम दृष्टिपात करना चाहिए और उन तमाम महान गौरवशाली नेताओं के गरिमामयी चरित्रों से कुछ प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए, जिन्होंने वतन के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था।

चारित्रिक तौर पर आजादी के दौर में एक सत्तानशीन पार्टी के रुप में शनैः शनैः कांग्रेस का जैसा अधोपतन दृष्टिगोचर हुआ, वह कुछ किसी से छुपा नहीं। 2009 के पश्चात केंद्र में सत्तानशीन कांग्रेस की कयादत में बनी यूपीए हुकुमत ने तो बेइमानी और भ्रष्टाचार के तमाम रिकार्डस को ध्वस्त कर दिया है। एक बेहद बदनाम और शर्मनाक स्थिति में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपना 125 वां राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित करने के लिए विवश हो रही है। कांग्रेस के वर्तमान शीर्ष नेतृत्व को स्वयं को और कांग्रेस को परखना चाहिए एवं गहन आत्मपरीक्षण करना चाहिए कि वे महानता की किन बुलंदियों से बदनामी की किस गर्त में आ गिरे हैं।

एक ब्रिटिश ब्यूरोक्रेट ने एक सेफ्टी वाल्व के तौर पर कांग्रेस को तशकील किया, जो कि कुछ ही अंतराल के पश्चात ब्रिटिश राज के लिए विकराल काल बनकर उभरी। जिसने कि दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, लोकमान्य तिलक, एनी बेसेंट, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, बिपिनचंद्र पाल, महात्मा गाँधी, खान अब्दुल गफ्फार खान, सरोजनी नायडू, मदनमोहन मालवीय, सरदार पटेल, पंडित नेहरु, मौलाना आजाद, सुभाषचंद्र बोस, सरीखे नेताओं को इतिहास की शानदार शख्सियते बना दिया। ब्रिटिश काल में बेहद ताकतवर राष्ट्रीय

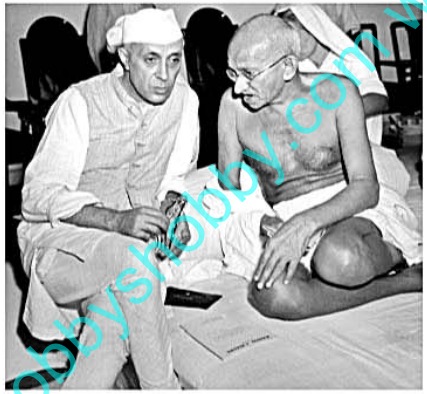

आंदोलन का सृजन करने वाली कांग्रेस ने इतिहास के अनेक उतार चढाव देखे हैं।

लोकमान्य तिलक ने नारा दिया, स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। उनके बाद गाँधी की कुशल रणनीति ने कांग्रेस को सर्वसाधारण की पार्टी बना दिया, जिसकी पांतों में गरीब किसान मजदूर सबसे अधिक शिरकत अंजाम दी। कांग्रेस के बेहद बहादुर शेर सुभाष बोस ने देश से बाहर जाकर इंडियन नेशनल आर्मी के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध ऐलान ए जंग किया। आखिरकार देश को खंडित आजादी प्राप्त हुई। महात्मा गाँधी आजादी के पश्चात कांग्रेस को राजनीतिक दल के तौर पर समाप्त करके इसे एक समाजसेवी संस्था बना देने के पक्ष में थे, किंतु सत्ता के लिए लालायित कांग्रेस नेताओं ने महात्मा की इच्छा को पूर्णतः नकार दिया।

आजादी के आरम्भिक दौर में कांग्रेस ने 20 वर्षो तक विपक्ष की किसी गंभीर चुनौती के बिना निर्बाध रुप से एकछत्र शासन किया। पं0 नेहरु के शासनकाल में ही कांग्रेस की शीर्ष पांतों में भ्रष्टाचार के दीदार होने लगे थे, जबकि भ्रष्टाचार से लबरेज जीप स्कैंडल और मूदड़ा कांड देश के समक्ष आए। प्रतापसिंह कैरो जैसा भ्रष्ट कांग्रेसी नेता पंजाब प्रांत का मुख्यमंत्री बना, जोकि नेहरु काल की ही देन रहा। इंदिरा गाँधी के काल में नागरवाला कांड ने देश को सकते में डाल दिया था। नागरवाला कांड का आज तक रहस्य कायम है और इंदिरा जी को कलंकित किया करता है। 1967 के आम चुनाव में प्रथम बार कांग्रेस को गंभीर झटका लगा, जबकि देश के आठ राज्यों में विपक्ष सत्तानशीन हो गया।

125 वर्ष के अनुभव के बाद कांग्रेस क्या उस मकाम पर पंहुच चुकी है, जहां वह यह विचार करती है कि कांग्रेस के गौरवशाली इतिहास के बुनियादी तत्व और सिद्धांत, त्याग, तपस्या, आत्मबलिदान, सत्य, सादगी, ईमानदारी आज के दौर में व्यवहारिक रुप से उसके किसी काम के नहीं रह गए। आजादी के प्रारम्भिक दौर में कांग्रेस का चुनाव चिन्ह दो बैलों की जोड़ी हुआ करता था किंतु अब कांग्रेस के एजेंडे से किसान तिरोहित हो चुका है और किसान के स्थान पर कारपोरेट विराजमान हो चुका है।

इतिहास के कटघरे में खड़े कांग्रेस के नेतृत्व को इन सवालों का उत्तर देश को देना ही होगा। भारतमाता की 40 करोड़ संतान आजादी के 63 वर्षो के पश्चात भी रोटी रोजी के मोहताज होकर गरीबी रेखा के तले दबकर सिसक सिसक कर जीने के लिए क्यों विवश हैं, जबकि 63 वर्ष की आजादी के दौर में 54 वर्षो तक केंद्र में कांग्रेस ही सत्तानशीन रही। देश का अमीर आदमी अत्याधिक अमीर होता चला गया और गरीब बेहद गरीब हो गया।

**(पूर्व प्रशासनिक अधिकारी हैं)**

Reproduced by www.hobbyshobby.com with author's permission